Ea – सूबेदार का विश्वास मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१० | 1

– Save This Page as a PDF–

सूबेदार का विश्वास

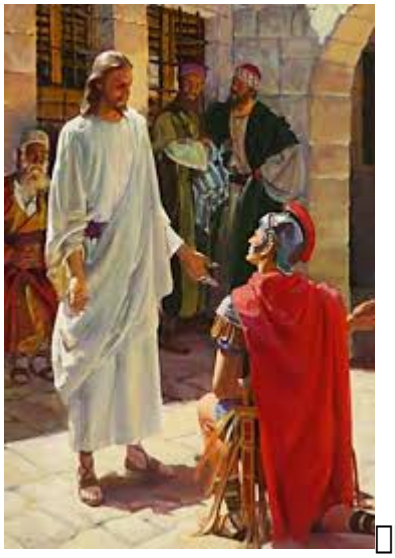
मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१०

खोदाई: सूबेदार ने खुद जाने के बजाय यहूदियों के कुछ बुजुर्गों को यीशु के पास क्यों भेजा? सूबेदार को अपने युवा सेवक के बारे में चिंतित होने में क्या असामान्य बात थी? प्रभु को आश्चर्य क्यों हुआ? प्रतिस्थापन धर्मशास्त्र ग़लत क्यों है? क्या वह महान चिकित्सक आज भी उपचार करता है? कैसे? कब? किन परिस्थितियों में?

चिंतन: आप परमेश्वर के अधिकार को कैसे समझते हैं? यदि आप इस्राएल के माध्यम से मसीहा के आशीर्वाद से प्रभावित हुए हैं, तो आज आप यहूदी लोगों को आशीर्वाद वापस करने के लिए क्या कर रहे हैं? सूबेदार की तरह, जीवन के तूफ़ानों में लोग समय बर्बाद नहीं करते या शब्दों का उच्चारण नहीं करते। वे सीधे उन लोगों के पास जाते हैं जिनका विश्वास उन्हें वास्तविक लगता है। क्या आप आज रात एक साथी ढूंढ रहे हैं? क्यों? क्यों नहीं?

बाइबिल की शुरुआत से ही, परमेश्वर की योजना हमेशा यह रही है कि यहूदियों और अन्यजातियों को एक साथ यहोवा की पूजा करनी चाहिए। तानाख में हम सीखते हैं कि पृथ्वी पर सभी लोगों को येशुआ के माध्यम से आशीर्वाद दिया जाएगा (उत्पत्ति Dt पर मेरी टिप्पणी देखें – मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा जो तुम्हें आशीर्वाद देंगे, और जो कोई तुम्हें शाप देगा मैं उसे शाप दूंगा)। रब्बी शाऊल हमें नई वाचा में सिखाता है कि यहूदियों और अन्यजातियों के बीच शत्रुता की विभाजनकारी दीवार को गिरा दिया गया है (इफिसियों २:१४)।

Ea – सूबेदार का विश्वास मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१० | 2



जब यीशु ने उन लोगों से यह सब कहना समाप्त कर लिया जो उसकी
शिक्षाएँ सुन रहे थे (देखें Da – पर्वत पर उपदेश), तो उसने कफरनहूम में प्रवेश किया (मत्ती ८:५ए; लूका ७:१)। ईसा मसीह कफरनहूम को अपना गृह आधार मानते थे। लेकिन क्योंकि कफरनहूम रोमन कब्जे के तहत एक यहूदी शहर था, इसने येशुआ को किसी गैर-यहूदी के लिए सार्वजनिक रूप से मंत्री बनने का पहला अवसर दिया। क्योंकि उसने इस पर श्राप दिया था (मत्ती ११:२३), प्राचीन शहर अब अस्तित्व में नहीं है, केवल एक आराधनालय और कुछ घरों के खंडहरों के रूप में। मसीहा के समय में यह एक सुखद शहर था और उसने वहां काफी समय बिताया था, शायद इसका अधिकांश समय पतरस के घर में बिताया था (मत्ती ८:१४)।

जब वह पहुंचे, तो सूबेदार नामक एक रोमन सेना कार्यालय उनसे मदद मांगने आया (मत्ती ८:५बी)। उसे सूबेदार / सेंचुरियन इसलिए कहा जाता था क्योंकि एक सेंचुरी १०० की एक इकाई होती है और उसने १०० रोमन सैनिकों की कमान संभाली थी। इस बात की अच्छी संभावना है कि वह अन्यजातियों की एक विशेष श्रेणी से संबंधित था, जिन्हें ईश्वर से डरने वाले या यिरे हाशमायिम कहा जाता था। ये अन्यजाति थे जो इस्राएल के विश्वास के प्रति बहुत सम्मान रखते थे और यहां तक कि स्थानीय आराधनालय में भी जाते थे। हालाँकि, वे पूर्ण धर्मान्तरित (गेरिम) बनने से रह गए, जिन्होंने न केवल आराधनालय में भाग लिया, बल्कि धर्मान्तरित लोगों के लिए खतना, विसर्जन और मंदिर बलिदान जैसी आवश्यक आज्ञाओं का भी पालन किया। यह उल्लेखनीय है कि नई वाचा में वर्णित प्रत्येक रोमन सूबेदार के बारे में अनुकूल बातें की गई हैं, और बाइबल यह संकेत देती प्रतीत होती है कि उनमें से प्रत्येक ने अंततः यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता माना।

उसका सेवक, जिसे वह बहुत महत्व देता था, घर पर लकवाग्रस्त था, बहुत पीड़ा सह रहा था और मरने वाला था। जो भी बीमारी थी, जानलेवा थी. सूबेदार ने यीशु के बारे में सुना और यहूदियों के कुछ बुजुर्गों को उसके पास भेजा (मत्ती ८:६; लूका ७:२-३ए)।

Ea – सूबेदार का विश्वास मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१० | 3

प्रत्येक कस्बे में कुछ ऐसे लोग होते थे जिन्हें हम नगरपालिका अधिकारी कह सकते हैं जो महापौर के प्राधिकार के अधीन होते थे। लेकिन वहाँ आराधनालय के प्रतिनिधि भी थे जिन्हें यहूदियों के बुजुर्ग कहा जाता था, एक ऐसी संस्था जिसका अक्सर बाइबिल में उल्लेख किया गया है, और यहूदी समाज में इसकी गहरी जड़ें हैं।

जब रोमन सूबेदार अपने सेवक को ठीक करने के लिए यीशु के पास आया, तो आज के समलैंगिक धर्मशास्त्री किसी तरह सोचते हैं कि ग्रीक पाठ यह साबित करता है कि सेवक वास्तव में सूबेदार का प्रेमी था। यह झूठ उन लोगों से कहा जाता है जिनके कान खुजलाते हैं (२ तीमु ४:३), और उन अनपढ़ लोगों से कहा जाता है जो अपनी अगली बहस के लिए इस तरह के मूर्खतापूर्ण बयानों को याद करते हैं। समलैंगिक चर्च आंदोलन इस तरह के झूठ को दोहराने के लिए बाइबिल के अज्ञानियों की पर्याप्त संख्या पर भरोसा कर सकता है।

उससे अपने सेवक को आकर चंगा करने के लिए कहना (मत्ती ८:७; लूका ७:३बी)। एक कहावत है कि, “जैसा राजा – वैसा दूत।” लूका के दिमाग में, हालांकि यहूदियों के बुजुर्ग वे थे जो वास्तव में ईसा मसीह से बात करते थे, यह सूबेदार ही थे जिन्होंने वास्तव में मदद मांगी थी। पेस, जिसका अनुवाद यहां मत्ती ने सेवक के रूप में किया है, का शाब्दिक अर्थ एक छोटा बच्चा है। हालाँकि, लूका उसे एक गुलाम (ग्रीक: डौलोस) कहता है, जो दर्शाता है कि वह संभवतः सूबेदार के गुलाम घर में पैदा हुआ था। सेवक शब्द में दोनों अर्थ समाहित होंगे।

जब वे यीशु के पास आए, तो उन्होंने उससे आग्रहपूर्वक विनती करते हुए कहा: यह व्यक्ति इस योग्य है कि आप ऐसा करें (लूका ७:४), क्योंकि वह हमारे [लोगों] से प्रेम करता है और उसने हमारे आराधनालय का निर्माण किया है (लूका ७:५)। योग्य शब्द की व्याख्या अर्जित उपकार के रूप में नहीं की जानी चाहिए, जैसा कि ७:६-७ में सूबेदार के उत्तरों से पता चलता है। तथ्य यह है कि येशुआ ने उनके अच्छे कार्यों के बजाय उनके विश्वास पर टिप्पणी की, यह दर्शाता है कि योग्य शब्द को योग्य एहसान के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। यह ऐसा था मानो यहूदियों के बुजुर्ग कह रहे हों, “वह उस तरह का आदमी है जो हमारे लोगों के लिए अच्छा रहा है।” सूबेदार इब्राहीम वाचा के आशीर्वाद के अधीन था, जिसमें कहा गया था: जो तुम्हें आशीर्वाद देंगे मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा (उत्पत्ति १२:३ए)।

यह तथ्य कि सूबेदार अपने सेवक की इतनी परवाह करता था, उसे सामान्य रोमन सैनिक से अलग करता था, जो हृदयहीन और क्रूर हो सकता था। आम तौर पर, उस समय एक गुलाम मालिक के मन में अपने गुलाम के लिए एक जानवर से अधिक कोई सम्मान नहीं होता था। महान यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि निर्जीव चीज़ों के प्रति कोई मित्रता नहीं हो सकती और न ही न्याय हो सकता है, यहाँ तक कि घोड़े या दास के प्रति भी नहीं, क्योंकि स्वामी और दास में कोई समानता नहीं मानी जाती। “एक दास,” उन्होंने कहा, “एक जीवित उपकरण है, जैसे एक उपकरण एक निर्जीव दास है” (नीतिवचन, १:५२)। फिर भी, कफरनहूम के सूबेदार के पास ऐसी कोई बाध्यता नहीं थी। वह एक सैनिक का सिपाही था, लेकिन उसे

Ea – सूबेदार का विश्वास मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१० | 4

अपने मरते हुए गुलाम लड़के पर गहरी दया थी और वह व्यक्तिगत रूप से यीशु के पास जाने में अयोग्य महसूस करता था। येशुआ उस आदमी के दिल को जानता था और उसे सीधे सूबेदार या उसकी ओर से आए यहूदियों से कोई अनुरोध सुनने की ज़रूरत नहीं थी। उसने बस प्यार से जवाब देते हुए कहा: मैं आऊंगा और उसे ठीक कर दूंगा (मत्ती ८:७बी एनएएसबी)।

यीशु घर से दूर नहीं था जब सूबेदार ने उसे देखा और उससे कहने के लिए दोस्तों को भेजा, “हे प्रभु, अपने आप को परेशान मत करो, क्योंकि मैं इस लायक नहीं हूं कि तुम मेरी छत के नीचे आओ” (लूका ७: ६ बी)। यहां फिर से ग्रीक इंगित करता है कि, लूका के दिमाग में, सूबेदार ने अपने दोस्तों के होठों के माध्यम से मसीह से ये शब्द कहे थे। हालाँकि बाइबल में किसी यहूदी को किसी अन्यजाति के घर में प्रवेश करने से रोकने का कोई प्रत्यक्ष निषेध नहीं था, लेकिन यह समझ में आता है कि वस्तुतः सभी लोग ऐसी कार्रवाई से बचेंगे ताकि अपवित्र न हो जाएँ (प्रेरितों १०:२८, ११:३ और १२; ट्रैक्टेट ओहलोट १८:७). रोमन अधिकारी पहले से ही इस तरह के विश्वास को समझ गया था और उसे उम्मीद थी कि येशुआ, एक रब्बी, अपने घर नहीं आएगा। लूका हमें बताता है कि सूबेदार ने ईसा मसीह के सामने अपनी अपील पेश करने के लिए यहूदियों के कुछ बुजुर्गों को भी भर्ती किया था, जो उस समय के सांस्कृतिक मुद्दों की उनकी समझ का एक और संकेत था (लूका ७:३)।

उसे लगा कि यीशु वास्तव में उसके लिए इतनी परेशानी उठाने के लिए अयोग्य है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह यह भी नहीं चाहता था कि वह यहूदी परंपरा को तोड़े। इसलिये उस ने कहा, मैं ने अपने आप को तेरे पास आने के योग्य भी न समझा (मत्ती ८:८ए; लूका ७:६सी)। जबकि मत्ती और लूका दोनों ने सूबेदार के विश्वास पर जोर दिया, लूका ने उसकी विनम्रता पर भी जोर दिया।

सूबेदार की ओर से बोलते हुए, उसके मित्रों ने कहा: हे प्रभु, यदि तू केवल वचन कहे, तो मेरा दास चंगा हो जाएगा (मत्ती ८:८बी; लूका ७:७)। वह प्रभु की उपचार शक्ति को जानता था और वह शक्ति के प्रत्यायोजन को भी समझता था: क्योंकि मैं स्वयं अधिकार के अधीन व्यक्ति हूं, मेरे अधीन सैनिक हैं। मैं उससे कहता हूं, ‘जाओ,’ और वह चला जाता है; और वह एक, ‘आओ,’ और वह आता है। मैं अपने सेवक से कहता हूं, ‘यह करो,’ और वह ऐसा ही करता है” (मत्ती ८:९; लूका ७:८)। उसे विश्वास था कि परमेश्वर का बोला हुआ वचन (ग्रीक: रेमा) ही उसके सेवक के उपचार के लिए आवश्यक था। जब उसने इसे देखा तो उसने अधिकार को पहचान लिया, यहां तक कि एक वास्तविक चमत्कार या उपचार में भी जिसमें उसके पास कोई अनुभव या समझ नहीं थी। वह जानता था कि यदि उसके पास सैनिकों और दासों को केवल आदेश देकर अपनी बात मनवाने की शक्ति है, तो येशुआ की अलौकिक शक्तियां और भी आसानी से उसे केवल शब्द कहने और सेवक को ठीक करने की अनुमति दे सकती हैं।

यह नई वाचा के कुछ समयों में से एक है जब नाज़रेथ के पैगंबर को आश्चर्यचकित कहा

Ea – सूबेदार का विश्वास मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१० | 5

जाता है। जब यीशु ने यह सुना, तो वह चकित हो गया और अपने पीछे आनेवालों से कहा: मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में ऐसा महान विश्वासवाला कोई नहीं पाया (मत्ती ८:१०; लूका ७:९)। कई यहूदियों ने मेशियाक में विश्वास किया था, लेकिन किसी ने भी इस अन्यजाति सैनिक की ईमानदारी, संवेदनशीलता, विनम्रता, प्रेम और विश्वास की गहराई नहीं दिखाई थी। यहां जो हुआ वह अंततः राष्ट्रीय स्तर पर होगा। यहूदी मसीहा को अस्वीकार करेंगे और अन्यजाति उसे स्वीकार करेंगे। मैं तुम से कहता हूं, कि बहुत से अन्यजाति पूर्व और पश्चिम से आएंगे, और स्वर्ग के राज्य में इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के साथ भोज में अपना स्थान ग्रहण करेंगे (मत्ती ८:११)।

परन्तु फरीसियों, या राज्य की प्रजा को बाहर अन्धकार में फेंक दिया जाएगा, जहां रोना और दांत पीसना होगा (मत्ती ८:१२)। कभी-कभी यहूदी-विरोधी सोचते हैं कि चूंकि सुसमाचार पूरी मानवता के लिए है, इसलिए यहोवा को अब एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल में कोई दिलचस्पी नहीं है (भले ही मत्ति २३:३७-३९ इसके विपरीत साबित होता है)। यह त्रुटि – प्रतिस्थापन धर्मशास्त्र, डोमिनियन धर्मशास्त्र, किंगडम नाउ धर्मशास्त्र, वाचा धर्मशास्त्र (इसके कुछ रूपों में), पुनर्निर्माणवाद, और इंग्लैंड में, पुनर्स्थापनवाद के रूप में जानी जाती है – इसके यहूदी-विरोधी निहितार्थों के साथ, इतनी व्यापक है कि बी’ में अंश इसके अनुरूप होने के लिए रीत चदाशाह का गलत अनुवाद भी किया गया है (उदाहरण के लिए रोमियों १०:१-८)। प्रस्तुत श्लोक उन्हीं अंशों में से एक है।

हालाँकि, इस कहानी का मुद्दा अन्यजातियों का बहिष्कार नहीं बल्कि समावेशन है। यहां येशुआ ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हर जगह (पूर्व और पश्चिम से) के गैर-यहूदी, यहां तक कि नफरत करने वाले रोमन विजेताओं का एक अधिकारी भी, यहोवा में विश्वास करके (मत्ती ८:१० देखें), परमेश्वर के लोगों में शामिल हो सकते हैं (प्रतिस्थापित नहीं कर सकते) और ले सकते हैं स्वर्ग के राज्य में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ दावत में उनके स्थान (मत्ती ८:११)। इस्राएलियों से संबंधित भविष्यवक्ताओं के कई बयानों की तरह, मत्ती ८:१२ ऊपर विश्वास की कमी के खिलाफ एक चेतावनी है, न कि एक अपरिवर्तनीय भविष्यवाणी।

तब यीशु ने अपने दूतों के द्वारा सूबेदार से कहा, जा! इसे वैसा ही होने दें जैसा आपने सोचा था कि यह होगा। और उस रोमन अधिकारी के सच्चे विश्वास के कारण, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसका सेवक उसी क्षण ठीक हो गया (मत्ती ८:१३)। सेवक लड़के को शायद यह भी नहीं पता होगा कि उसके मालिक ने उसे ठीक करने के लिए ईसा मसीह को बुलाया था। बाइबिल में इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि सेवक विश्वासी था। येशुआ ने उसे कभी नहीं छुआ – यहाँ तक कि उससे व्यक्तिगत रूप से मुलाकात भी नहीं की। महान चिकित्सक ने बस शब्द बोला और वह ठीक हो गया।

यीशु ने एक शब्द या स्पर्श से चंगा किया। उसने तुरंत चंगा किया, उसने जन्म से ही

Ea – सूबेदार का विश्वास मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१० | 6

जैविक बीमारियों को ठीक किया और उसने मृतकों को जिलाया। जो भी उसके पास आए, उसने उन्हें पूरी तरह से ठीक किया। जो लोग आज उपचार के उपहार का दावा करते हैं वे क्रूर धोखेबाज हैं। यदि वे वास्तव में ठीक उसी तरह से ठीक कर सकते हैं जैसे मसीहा ने पृथ्वी पर चलने के दौरान ठीक किया था, तो वे अस्पताल के पंखों को साफ कर रहे होते, कैंसर के रोगियों को ठीक कर रहे होते और पतरस (प्रेरितों ९:३६-४२) और पॉल (प्रेरितों २०:१०) की तरह मृतकों को जीवित कर रहे होते। जब उनका कथित उपहार पूरा नहीं हो पाता, तो वे बीमार, घायल या विकृत लोगों को दोषी ठहराते हैं और कहते हैं कि उनके विश्वास की कमी ने उपचार को रोक दिया। व्हीलचेयर पर बैठे जोनी एरिक्सन टाडा ने इस तरह के आध्यात्मिक शोषण का अनुभव किया।

तो, क्या महान चिकित्सक आज भी उपचार करता है? हाँ, बिना किसी संदेह के। लेकिन वह अपनी इच्छा के आधार पर और अपने समय के अनुसार ठीक करता है। यीशु ने यह सिद्धांत वैसे नहीं दिया जैसा आप मानते थे कि यह सभी विश्वासियों के लिए एक सार्वभौमिक वादा होगा। रब्बी शाऊल को यहोवा की उसे ठीक करने की क्षमता पर पूरा भरोसा था, और उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया, और अक्सर ईश्वर के चमत्कारी उपचार के साधन के रूप में उपयोग किया जाता था। परन्तु जब उसने अपने शरीर में काँटा निकालने के लिए तीन बार प्रार्थना की, तो प्रभु का उत्तर था: मेरी कृपा तुम्हारे लिए पर्याप्त है, क्योंकि शक्ति कमजोरी में सिद्ध होती है (दूसरा कुरिन्थियों १२:७-९)।

जब भेजे गए मनुष्य घर लौटे, तो उन्होंने सेवक को अच्छा पाया (लूका ७:१०)। रोमन सूबेदार एक गैर-यहूदी विश्वासी का एक महान उदाहरण है, जिसका इब्राहीम, इसहाक और जैकब के ईश्वर में व्यक्तिगत विश्वास है, और परिणामस्वरूप, इज़राइल के लोगों के लिए प्यार है।

सूबेदार ने कहा: मैं अधिकार के अधीन व्यक्ति हूं। हम यहोवा के अधिकार को कैसे समझते हैं? हम जानते हैं कि परमेश्वर ने संसार की रचना की और कहा है कि हम इस पर शासन करेंगे (उत्पत्ति १:२६)। हम यह भी जानते हैं कि पिता ने यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी अधिकार दिए हैं (मत्ती २८:१८), और उसे शरीर, चर्च के प्रमुख पर रखा है (कुलुस्सियों १:१८)। परिणामस्वरूप, सारा अधिकार ईश्वर से आता है। मसीहा ने अपने जुनून के दौरान पोंटियस पीलातुस को यह याद दिलाया: जब तक यह तुम्हें ऊपर से नहीं दिया जाता, तब तक तुम्हारा मुझ पर कोई अधिकार नहीं होता (यूहन्ना १९:११)।

पिछले कुछ वर्षों में समय-समय पर, हम मानव अधिकार से निराश हुए होंगे, खासकर जब हमने इसे अनुचित तरीके से उपयोग करते देखा है। हालाँकि, प्रभु कभी भी हमें अपने अधिकार से नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करते हैं। उन्होंने हमें अच्छाई और बुराई चुनने की आजादी दी है। जब हम ईश्वर के पूर्ण अधिकार को पहचानते हैं, तो हम उन आदेशों का पालन करना चाहेंगे जो उसने हमें अपने चर्च के माध्यम से दिए हैं। उनके आदेश एक उपहार हैं जिसका उद्देश्य हमें अधिक प्रेमपूर्ण और फलदायी जीवन

Ea – सूबेदार का विश्वास मत्ती ८:५-१३ और लूका ७:१-१० | 7

जीने में मदद करना है – ऐसा जीवन जो उनकी अच्छाई और प्रेम की गवाही देगा।

सूबेदार की तरह, हमारे जीवन पर परमेश्वर के अधिकार की स्वीकृति हमें अधिक विश्वास के लिए खोल सकती है। जब हम मसीह के नाम पर प्रार्थना करते हैं, तो हम भय, बीमारी, चिंता और पाप सहित सभी चीजों पर उसके अधिकार का आह्वान कर रहे हैं। हालाँकि हम योग्य नहीं हैं, येशुआ उस विश्वास से प्रसन्न होता है जो हम संकट के समय में उसे पुकारते समय प्रदर्शित करते हैं। सूबेदार की तरह, हम प्रभु की शक्ति पर बहुत भरोसा कर सकते हैं।